

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار الله بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुल्ब: जुम्अ: सैय्यदना खलीफतुल मसीहिल खामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अजीज दिनांक 22.07.16 बैतुल फतूह लंदन।

आँहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा तो ऐसे भाग्यशाली थे कि जब अपनी अवस्था पर विचार करके चिंतित होते तो आपकी सेवा में चले जाते थे और फिर आँहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र शक्ति के कारण अपना निवारण कर लेते थे परन्तु हमें तो इस चिंता में रहते हुए अपनी इबादतों, हुआओं तथा इस्तिगफार के माध्यम को सदैव धारण किए रहना चाहिए तथा इसके द्वारा अपना इलाज करते रहना चाहिए।

तशहूद तअव्वुज तथा सूर: फ़ातिह: की तिलावत के पश्चात हुजूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अजीज ने फ़रमाया-

हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मेहनत व परिश्रम की आदत तथा स्वस्थ रहने और शरीर को चुस्त रखने के लिए आपका क्या नियम था, इसका वर्णन करते हुए हजरत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि आप कदापि सुस्त न थे अपितु बड़े परिश्रमी थे तथा एकांत में रहने की रूचि के बावजूद परिश्रम से न घबराते थे और बार बार ऐसा होता था कि आपको जब कहीं यात्रा करनी होती तो सवारी का घोड़ा सेवक के द्वारा आगे भिजवा देते और आप पैदल ही बीस पच्चीस मील की यात्रा करके गन्तव्य तक पहुंच जाते बल्कि अधिकांशतः आप पैदल ही यात्रा करते थे और सवारी का प्रयोग कम करते थे और यह पैदल चलने की प्रवृत्ति आपको अन्तिम समय तक रही तथा सत्तर वर्ष से अधिक की आयु में जबकि आपको कुछ भयंकर रोग भी थे प्रायः प्रतिदिन सैर के लिए जाते तथा चार पाँच मील प्रतिदिन, फिर आते और कई बार सात मील पैदल ही चल लेते थे और बुढ़ापे से पहले का हाल आप बयान फ़रमाया करते थे कि कई बार सुबह की नमाज़ से पहले उठकर सैर के लिए निकल पड़ते थे और वडाला तक पहुंच कर जो क्रादियान से लगभग साढ़े पाँच मील की दूरी पर एक गाँव है, सुबह की नमाज़ का समय होता।

इस प्रकार यह उदाहरण है हमारे लिए, विशेष रूप से वाक्फ़ीन-ए-ज़िन्दगी के लिए जिनके सपुर्द जमाअत की सेवा का काम है जिनमें मुरब्बी पहले नम्बर पर हैं कि अपने स्वास्थ्य को स्थापित रखने तथा शरीर को सुदृढ़ बनाने के लिए व्यायाम अथवा सैर की यथावत् आदत डालें। यदि सैर नहीं कर सकते, समय की कमी के कारण तो कुछ समय व्यायाम के लिए अवश्य निकालना चाहिए।

हुजूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- हमारे मुरब्बी और वाक्फ़ीन-ए-ज़िन्दगी को किसी न किसी प्रकार का व्यायाम अवश्य करना चाहिए तथा दूसरे इन पश्चिमी देशों में रोग युक्त और अस्वस्थ आहार भी बड़ा सामान्य है, इससे बचना चाहिए। मुरब्बी को थोड़ा बहुत खाना बनाना भी आना चाहिए। यह मैं आपको केवल उपदेश नहीं दे रहा बल्कि मैं स्वयं भी अल्लाह की कृपा से यथावत् व्यायाम करता हूँ। अतः हमें स्वस्थ वाक्फ़ीन-ए-ज़िन्दगी और मुरब्बी चाहिए, इस संदर्भ में इन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे अपने स्वास्थ्य के विषय में निश्चिंत और सुस्त न हों ताकि अपने काम को सुन्दर ढंग से सम्पन्न कर सकें।

कई बार कुछ लोग बड़ी चिंता करते हैं कि हमारी नेकी का स्तर एक जैसा नहीं रहता, यह बड़ी अच्छी बात है। इस संदर्भ में कि इंसान आत्म-निरीक्षण करता रहे कि यह स्थिति, जो मुझमें नेकी की कमी की है यह क्यों हुई तथा यह चिंता हो कि अधिक

समय तक न रहे और इसके समाधान की चिंता करे। तो इस प्रकार यह बड़ा अच्छा लक्षण है परन्तु कई बार यह भी होता है कि यह कोई बुराई नहीं होती बल्कि नेकी, अधिक नेकी तथा कम नेकी का जो स्तर है वह आता जाता रहता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भी एक व्यक्ति आया, आपके एक सहाबी आए। उन्होंने कहा कि या रसूलुल्लाह मैं तो मुनाफ़िक़ (पाखण्डी) हूँ। मैं जब आपके निकट मज्लिस में बैठता हूँ तो मेरी स्थिति कुछ और होती है और जब आपकी मज्लिस से उठकर चला जाता हूँ तो मेरी स्थिति कुछ और होती है। अर्थात् नेकी और पवित्रता की अवस्था वह नहीं रहती जो आपकी निकटता में है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यही तो मोमिन होने की निशानी है, तुम मुनाफ़िक़ नहीं हो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यह सोच थी सहाबा की और जब यह आभास होता है तो फिर इंसान दुआ और इस्तिग़फ़ार के द्वारा अपनी स्थिति को सुचारू करने की ओर ध्यान देता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा तो ऐसे भाग्यशाली थे कि जब अपनी अवस्था पर विचार करके चिंतित होते तो आपकी सेवा में चले जाते थे और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र शक्ति के कारण अपना निवारण कर लेते थे परन्तु हमें तो इस चिंता में रहते हुए अपनी इबादतों, दुआओं तथा इस्तिग़फ़ार के माध्यम को सदैव धारण किए रहना चाहिए तथा इसके द्वारा अपना इलाज करते रहना चाहिए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु एक बार यह विषय बयान फ़रमा रहे थे कि प्रसन्न होने और उदास होने का सम्बंध भावनाओं से है। उदाहरणतः किसी के घर में शादी है तो वह इस शादी की ख़ुशी के लिए यदि ऋण भी लेना हो तो वह ऋण लेकर उस ख़ुशी को पूरा करने का प्रयास करता है तथा उसके निकट सम्बंधी भी इस ख़ुशी में शामिल होते हैं परन्तु जिनको इस अवसर से कोई सम्बंध नहीं होता उनके लिए उस व्यक्ति का ख़ुशी करना अथवा उसके कुटुम्ब वालों का ख़ुशी करना तथा इसके लिए अपने आपको कठिनाई में डालना अथवा ऋण लेना, कोई महत्त्व नहीं रखता। इसी प्रकार एक व्यक्ति एक परिवार का अभिभावक हो, यदि वह मर जाए तो घर में मृत्यु-शोक होता है परन्तु अन्य लोग जिनका उसके साथ कोई सम्बंध नहीं होता उनके लिए उसके निधन का कोई महत्त्व नहीं होता। हज़ारों लोग प्रतिदिन मरते हैं, देहांत होते हैं परन्तु हमारी जानकारी में आने के बावजूद, जिनको हम जानते नहीं, उनके विषय में कुछ आभास नहीं होता जबकि यदि अपना कोई निकट सम्बंधी मर जाए तो बड़ा भारी उसका प्रभाव होता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि भावनाओं की यह अदभुत श्रंखला है इस पर विचार करने से आश्चर्य जनक अवस्था उत्पन्न होती है। एक बात किसी के लिए प्रसन्नता का अवसर तथा आनन्द की एक घड़ी होती है परन्तु दूसरे के लिए शोक पूर्ण प्रभाव रखती है।

फ़रमाते हैं कि यह विषय मुझे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक वाक्य में सिखाया था। फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यथावत् समाचार पत्र पढ़ा करते थे। यह भी हमारे उन लोगों के लिए जिनके सपुर्द दीन के कामों का दायित्व है, इसमें एक यह शिक्षा भी है कि उनको यथावत् अख़बार भी पढ़ने चाहिएँ तथा छोटी छोटी ख़बरों को भी देख लेना चाहिए। इस प्रकार फ़रमाते हैं कि आप यथावत् अख़बार पढ़ा करते थे। एक दिन, 1907 की बात है, अख़बार पढ़ते हुए मुझे आवाज़ दी। महमूद! कहते हैं कि जब मैं उपस्थित हुआ तो मुझे ख़बर सुनाई। एक व्यक्ति, उसका नाम याद नहीं, कि मर गया है। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं- इस पर मेरी हंसी निकल गई और मैंने कहा कि मुझे उससे क्या। हज़रत साहब ने फ़रमाया कि उसके घर में तो शोक की स्थिति होगी और तुम कहते हो कि मुझे क्या? इसका क्या कारण है, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं इसका कारण यह है कि जिसके साथ सम्बंध न हो उसके दुःख का प्रभाव नहीं होता और इसी प्रकार यदि कोई उल्लास का अवसर है तो उस उल्लास का प्रभाव नहीं होता।

अतः इस बात को याद रखना चाहिए कि अपने परोपकारियों तथा उनकी संतानों के लिए विशेष रूप से दुआएँ करनी

चाहिएँ। खुशी और दुःख के अवसरों पर उनको याद रखना चाहिए तथा जमाअत के लोगों के लिए सामान्य रूप से भी परस्पर सुख और दुःख में भावनाओं की अभिव्यक्ति होनी चाहिए क्योंकि जमाअत भी एक अस्तित्व है तथा भावनाएँ उसी समय उत्पन्न होती हैं जब हम प्रत्येक जमाअत के व्यक्ति को तथा उसकी खुशी को अनुभव भी करें और यह चीज़ है जो जमाअत में एकता पैदा करना का भी माध्यम है।

फिर कुछ लोग आपत्ति कर देते हैं कि उदाहरणतः किसी को जमाअत की ओर से दंडित किया गया अथवा किसी के विरुद्ध कोई कार्यवाही हुई है तो वह कहता है कि मेरे विरुद्ध जो अमुक कार्यवाही हुई है, अनुचित हुई है तथा अमुक व्यक्ति के विरुद्ध नहीं हुई तथा उसका समर्थन किया गया है। इस प्रकार की आपत्तियाँ कोई नई बात नहीं हैं। प्रत्येक युग में इस प्रकार की आपत्तियाँ मिलती हैं आज भी ये लोग करते हैं, पहले भी किया करते थे। अतः ऐसे ही लोगों का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि-

वास्तविकता यह है निज़ाम को ठीक रखने के लिए विचारों में समानता की एक परिधि होती है। सम्भवतः एक मतभेद बड़ा दिखाई पड़े परन्तु यदि वह बात किसी उपद्रव का कारण न बने तो इस विरुद्ध विचार धारा के रखने वाले को जमाअत में शामिल होने की अनुमति दे दी जाए परन्तु एक अन्य व्यक्ति चाहे इससे कम मतभेद रखता हो परन्तु उसकी विचार धारा के द्वारा कोई उपद्रव हो जाए तो उसे जमाअत से निकाल दिया जाए। फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से एक बार एक दोस्त ने पूछा कि मैं अभी शीअत (शीआ सम्प्रदाय की आस्थाओं) से निकल कर आया हूँ और हज़रत अली रज़ी. को हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. से उत्तम समझता हूँ क्योंकि मुझ पर शीअत का प्रभाव अधिक है। अतः क्या इस आस्था के होते हुए मैं आपकी बैअत कर सकता हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें लिक्खा कि आप बैअत कर सकते हैं। परन्तु इसके विरुद्ध हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बार कुछ लोगों को क़ादियान से बाहर चले जाने का आदेश दिया, दंड के रूप में और उनके विषय में विज्ञापन भी प्रकाशित किया। कारण केवल यह था कि वे पाँच समय की नमाज़ों में उपस्थित नहीं होते थे और उनमें से कुछ ऐसे भी थे कि उनकी मज्लिसों में हुक्का पीने तथा व्यर्थ की चर्चाएँ होती थीं। अतः आपने वह चीज़ जो इस प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं रखती जैसे मदिरा सेवन अपने अन्दर रखती है, प्रयोग करने पर तो एक व्यक्ति को जमाअत से निष्कासित कर दिया और वह जिसने यह कहा था कि हज़रत अबू बकर रज़ीअल्लाहु अन्हु की तुलना में हज़रत अली रज़ीअल्लाहु अन्हु का स्तर उच्च समझता हूँ। इसके बावजूद कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपनी आस्था यह थी कि हज़रत अबू बकर रज़ीअल्लाहु अन्हु, हज़रत अली रज़ीअल्लाहु अन्हु की अपेक्षा उत्तम हैं, उसे बैअत करने की अनुमति दे दी। आप फ़रमाते हैं कि वास्तव में कुछ बातें किसी समय उपद्रव की संभावना के कारण बड़ी होती हैं जबकि वे छोटी होती हैं तथा कुछ बातें किसी समय उपद्रव की दृष्टि से छोटी होती हैं जबकि वास्तव में वे बड़ी होती हैं।

अतः क्षणिक उपद्रव की दृष्टि से कभी बड़ी बात को अनदेखा कर दिया जाता है तथा छोटी बात पर एक्शन ले लिया जाता है। परन्तु उन लोगों ने जो आपत्तियाँ करने वाले हैं, कभी बुद्धि का प्रयोग नहीं किया, उनका लक्ष्य केवल आपत्ति करना होता है। कुछ समर्थक पैदा हो जाते हैं उनके, जिनको सज़ा मिलती है। उनको पता नहीं होता कि वास्तविकता क्या है, किस कारण से दंड मिल रहा है। तो इस विषय में अकारण ही हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए अथवा किसी की सिफ़ारिश नहीं करनी चाहिए। हाँ, जब निज़ाम समझता है, निरीक्षण किया जाता है तो फिर उनकी माफ़ी भी हो जाती है। इस प्रकार के आपत्तिकर्ता, जैसा कि मैंने कहा कि आजकल भी हैं। अनुचित काम करते हैं, सज़ा मिले तो सुधार के बजाएँ निज़ाम के विरुद्ध भी बोलते हैं और फिर यह भी मांग होती है कि हम जैसे भी हैं वैसे ही रहेंगे, इसके बावजूद जमाअत का निज़ाम हमें अपना अंग बनाएँ, हमने सुधार नहीं करना।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीअल्लाहु अन्हु ने एक बार बच्चों के प्रशिक्षण के लिए एक निबन्ध लिखा जिसमें हज़रत मसीह

मौऊद अलैहिस्सलाम की एक कहानी का वर्णन किया। आप लिखते हैं कि इमाम अलैहिस्सलाम ने 5 सितम्बर 1898 को असर की नमाज़ के बाद मेरे निवेदन पर मुझे निम्नलिखित कहानी सुनाई जिससे ज्ञात होता है कि अल्लाह तआला पर पूर्ण विश्वास और भरोसा करना तथा सच्चा तक्वा इंसान को इस योग्य बना देता है कि खुदा तआला स्वयं उसका अभिभावक हो जाता है और ऐसे मार्गों से उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है कि किसी को पता भी नहीं चलता। अतः हज़रत अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि एक आदरणीय व्यक्ति कहीं यात्रा पर जा रहे थे और एक जंगल में से उनका गुज़र हुआ, जहाँ एक चोर रहता था और जो प्रत्येक आने जाने वाले यात्री को लूट लिया करता था। अपनी प्रवृत्ति के अनुसार उन आदरणीय व्यक्ति को भी लूटने लगा। बुजुर्ग साहब ने उसे फ़रमाया कि **وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ** अर्थात आसमान से तुम्हारा रिज़क है और जिसका तुम वादा दिए जाते हो शर्त यह है कि तुम नेकियों पर क़ायम रहो। फ़रमाया कि तुम्हारा रिज़क आसमान पर उपलब्ध है, तुम खुदा पर भरोसा करो और तक्वा धारण करो, चोरी छोड़ दो, खुदा तआला स्वयं तुम्हारी आवश्यकताओं की पूर्ति कर देगा। चोर के दिल पर प्रभाव हुआ, उसने उन बुजुर्ग को छोड़ दिया तथा उनके कहने के अनुसार काम किया यहाँ तक सोने चाँदी के बर्तनों में उसे भाँति भाँति के खाने मिलने लगे। कहाँ तो वह चोरियाँ किया करता था, कहाँ जब चोरी छोड़ कर खुदा पर भरोसा किया तो सोने चाँदी के बर्तनों में उसे खाना मिलने लगा। वह खाना खाकर बर्तनों को अपनी झोंपड़ी के बाहर फेंक दिया करता था। संयोगवश वही बुजुर्ग फिर उधर से गुज़रे तो उस चोर ने जो अब बड़ा नेक और मुत्तक़ी हो गया था, उस बुजुर्ग से पूरी हालत बयान की और कहा कि मुझे कोई और आयत बतलाओ। तो बुजुर्ग साहब ने फ़रमाया कि **فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ** अर्थात आसमान और ज़मीन के रब्ब की क़सम, यक़ीनन यह हक़ है। ये पवित्र शब्द सुनकर उस पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि खुदा तआला की महानता और प्रताप का ध्यान करके तड़प उठा और उसी में जान दे दी। तो यह आठ दस साल के एक बच्चे को कहानी सुनाई हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने और वे फिर आगे बच्चों को यही कह रहे हैं अपने निबन्ध में कि तक्वा धारण करने से कैसी दौलत मिलती है कि खुदा तआला जो धरती और आकाश के रहने वालों का पालन पोषण करता है, क्या उसके होने में कोई सन्देह है। वह पाक और सच्चा खुदा है जो हम सबको पालता है, पोसता है। अतः उसी खुदा से डरो, उस पर भरोसा करो और नेक चलन धारण करो। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में बच्चों की दशा थी कि उनको शिक्षा दी जाती थी जो आजकल के बड़ों के समझने में भी कठिन है। अतः हममें से प्रत्येक को सदैव याद रखना चाहिए कि तक्वा पर चलने का प्रयास करें तथा अल्लाह तआला के अस्तित्व पर इतना विश्वास हो तथा उस पर दृढ़ हों कि वही है जो हमारा पालन पोषण करने वाला है, वही है जो हमें पालता पोसता है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि वही पाक और सच्चा खुदा है तथा उसी से हमें डरना चाहिए, और हमें उसी से हर समय दुआएँ मांगनी चाहिए और उसी के आगे हमें झुकना चाहिए और उसी पर हमें सदैव भरोसा करना चाहिए और यही नेकी है जो एक मुसलमान के लिए धारण करना अनिवार्य है तथा जिस पर ईमान लाना अनिवार्य है और जिसके अनुसार कार्य करना आवश्यक है।

अतः इस शिक्षा का बड़ों के लिए भी बच्चों से अधिक महत्त्व है। आज के दौर में जब हम इन बातों को भूलते जा रहे हैं और कई बार तक्वा से दूर हट जाते हैं और अल्लाह तआला पर भरोसे के बजाए लोगों पर भरोसा अधिक हो जाता है, उनको याद रखना चाहिए कि वास्तविक भरोसा खुदा तआला के अस्तित्व पर होना चाहिए। अतः अल्लाह तआला करे कि हम सब में यह तक्वा पैदा हो।